पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में विभिन्न विचारधाराएँ

शुद्धतावादी विचारधारा

इस विचारधारा के प्रवर्त्तक डा० रघुवीर थे। डॉ० रघुवीर का कहना था कि शब्द और विचार अभिन्न हैं। नए विचार के साथ नए शब्द की आवश्यकता होती है। ये शब्द हम विजातीय भाषाओं से नहीं ले सकते। हम अपनी संस्कृत भाषा से ही ले सकते हैं। इसके आधार पर बने शब्द पारदर्शी होंगे। उनका कथन था कि भारतीय भाषाओं में उधार का एक भी विदेशी शब्द न आए। संस्कृत की 800 धातुओं, 80 प्रत्ययों व 26 उपसर्गों से लाखों - करोड़ों शब्द बनाए जा सकते हैं। जिन्हें भारतीय विद्यार्थी सरलता से समझ सकते हैं। अखिल भारतीय निर्माण के क्षेत्र में (पारिभाषिक शब्दावली) डॉ० रघुवीर ने भी वैज्ञानिक पद्धति स्थापित की जिसका लोहा आज भी भाषा वैज्ञानिक मान रहे हैं।

शुद्धता विरोधी विचारधारा

शुद्धतावादी विचारधारा के दूसरे किनारे पर एक ऐसी विचारधारा थी जो शुद्ध हिन्दुस्तानी शब्दों तथा देशज प्रत्ययों और उपसर्गों के आधार पर शब्द बनाने की समर्थक थी। इस कार्य के लिए ये लोग व्याकरणिक नियमों को त्यागने को भी तैयार थे। इस विचारधारा की समर्थक हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय थे। वे भाषा को सरल बनाने पर बल देते थे जिसके कारण ग्राम्य अग्राम्य का विचार किए बिना शब्दों का निर्माण किया गया। इनमें से बहुत कम शब्द ग्रहण किए गए। लोगों ने इनके अधिकांश शब्दों का

Scanned with CamScanner

बहिष्कार कर दिया। इसका प्रमुख कारण इनकी अव्याकरणिकता ही था।

अंग्रेजी विचारधारा

इस विचारधारा के समर्थक अंग्रेजी के शब्दों को ज्यों का त्यों लेने के पक्षधर थे। इसके समर्थक सी. गोपालाचारी तथा गंगाप्रसाद मुखर्जी थे। इनका मत था कि जिस प्रकार हिन्दी - अंग्रेजी मिश्रित बोली जाती है वैसा ही लिखित रूप स्वीकार कर उसे मानक रूप दे दिया जाए। अंग्रेजी समर्थकों को हिन्दी के गढ़े हुए शब्द कठिन लगते थे तथा अंग्रेजी के मुहावरे सरल लगते थे। यह विचारधारा भी मान्य नहीं हुई क्योंकि कोई भी भाषाभाषी अपनी भाषा का विदेशीकरण अच्छा नहीं समझता।

Scanned with CamScanner